



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुख्यपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 43 • 2 - 8 अगस्त, 2021



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 31-07-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

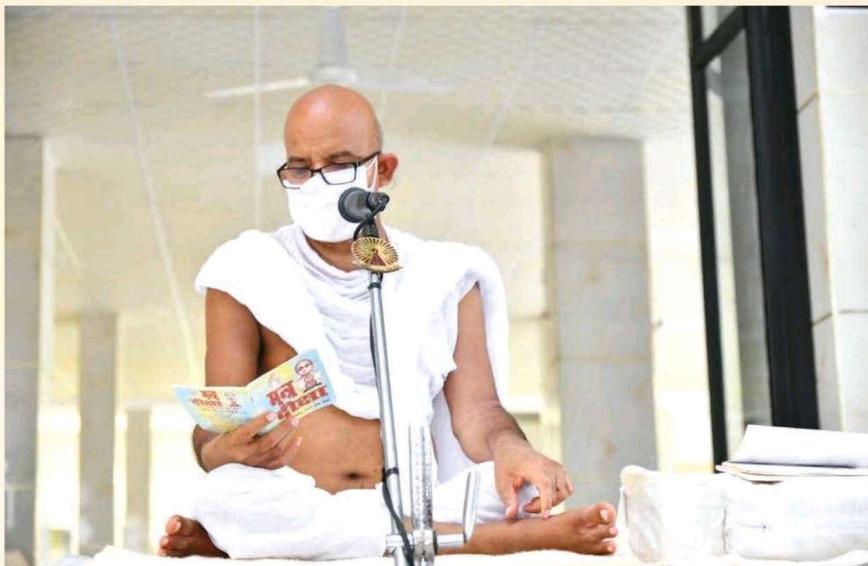
गुरु पूर्णिमा - २६२वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस - मंत्र दीक्षा

संवैधानिक मर्यादाओं के अनुपालन से बना तेरापंथ महान : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २४ जुलाई, २०२१

आषाढ़ी पूर्णिमा। आज गुरु पूर्णिमा है। आज के दिन जैन एवं समस्त हिंदु संप्रदायों में गुरु की पूजा की जाती है। विंस० १८७९ आषाढ़ी पूर्णिमा को ही तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना केलवा में हमारे आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने भाव-दीक्षा ग्रहण कर की थी। वो दिन शनिवार का था। आज भी शनिवार है। साथ में आज ही के दिन प्रायः सभी क्षेत्रों की ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा प्रदान की जाती है।

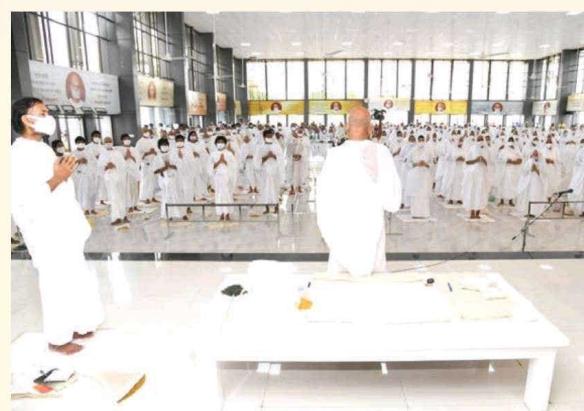
भैक्षव शासन के एकादशम महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाठ्य प्रदान करते हुए फरमाया कि 'हमारे भाग्य बड़े बलवान, मिला यह तेरापंथ महान'। गीत की ये पंक्तियाँ हैं। तेरापंथ महान ये दो शब्द होता है कि



आज तक चलती आ रही है। हमारा संविधान कहता है कि विहार चतुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें। प्रायः इसका भी ठीक पालन होता आ रहा है।

हमारा संविधान कहता है—अपना-अपना शिष्य-शिष्याएँ नहीं बनाएँ तो आज भी देख लो संविधान की इस धारा पर बखूबी पालन हो रहा है। भावी आचार्य का निर्णय वर्तमान आचार्य करे, इस धारा का पालन भी सामान्य रूपेण-एक प्रसंग को छोड़ दें तो यथावत होता आया है। आशा करें आगे भी ये सुव्यवस्थित चलता रहे।

संविधान स्पष्ट, स्वच्छ और उपयोगी अच्छा हो तो संगठन महान बन सकता है। संगठन के जो सदस्य हैं, वे भी महान हो। एक-एक ईंट के टुकड़े से मकान बनता है। सदस्यों के लिए पांच बातें मैं बताना चाहता



तेरापंथ महान कैसे है?

इस प्रश्न के आलोक में कुछ बोलना चाहता हूँ। तेरापंथ धर्मसंघ एक संगठन है। हमारा धर्मसंघ यह जैन श्वेतांबर तेरापंथ कोई राजनैतिक या सामाजिक संगठन नहीं

है। इसका मुख्य स्वरूप एक धर्मिक संगठन के रूप में है।

हमारे संगठन का जन्म आज के दिन आषाढ़ी पूर्णिमा को २६१ पूर्व हुआ था। सीधे-साधे रूप में स्थापना हो गई, कोई

प्रदर्शन नहीं था।

संत भीखण्डी और उनके साथी संतों ने आज के दिन चारित्र ग्रहण नए रूप से किया था, वस उसी को हमने तेरापंथ की स्थापना मान लिया। संगठन का एक प्राण-तत्त्व उसका संविधान होता है। संगठन का संचालन संविधान के आधार पर भी होता है।

हमारे धर्मसंघ में भी संविधान-मर्यादाएँ बनाई गईं। संविधान अगर सशक्त और स्पष्ट होता है, तो कोई संगठन महान बन सकता है। संविधान स्पष्ट और स्वच्छ हो। संविधान का पालन कर सके, वो चेतना भी जगाई जाती रहे। लिखा हुआ तो जड़ होता है। संविधान की जो भावना-चेतना है, संगठन के सदस्यों में भरी जाती है, कूट-कूटकर भरी जाती है, संस्कार रूप में वो बन जाती है, तो संविधान वास्तव में



प्रायावान बन सकता है।

संविधान के पालन की भी एक सीमा तक अच्छी व्यवस्था है। हमारे संविधान की एक मुख्य धारा है—‘सर्व साधु-साध्वीयाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें।’ यह धारा

हूँ—(१) श्रुत संपदा-ज्ञान का विकास हो। श्रुत की आराधना संगठन में चलती रहे। श्रुत का विकास होने से आलोक मिलता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

चातुर्मासिक पक्खी एवं हाजरी का वाचन

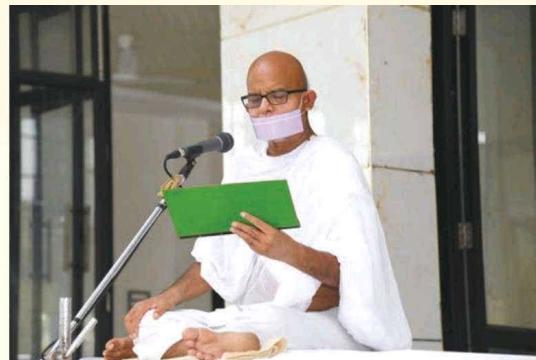
आद्यात्म की पूंजी को पृष्ट करने के लिए करें तपस्या : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २३ जुलाई, २०२१

चातुर्मासिक चौदस के अवसर पर महातपसी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाठ्य प्रदान करते हुए फरमाया कि एक प्रश्न है कि मार्ग कौन सा है? हमारे जीवन में मार्ग का ज्ञान भी आवश्यक होता है। आदमी पहले मंजिल को निर्धारित करे, मुझे कहाँ जाना है?

दूसरा फिर महत्वपूर्ण प्रश्न होता है, जो मंजिल मेरे द्वारा निर्धारित है, वहाँ पहुँचने का रास्ता कौन सा है? मार्गदर्शन की भी आवश्यकता होती है।

(शेष पृष्ठ २ पर)





समता की साधना विप्रसन्नता का महत्वपूर्ण उपाय है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २० जुलाई, २०२१

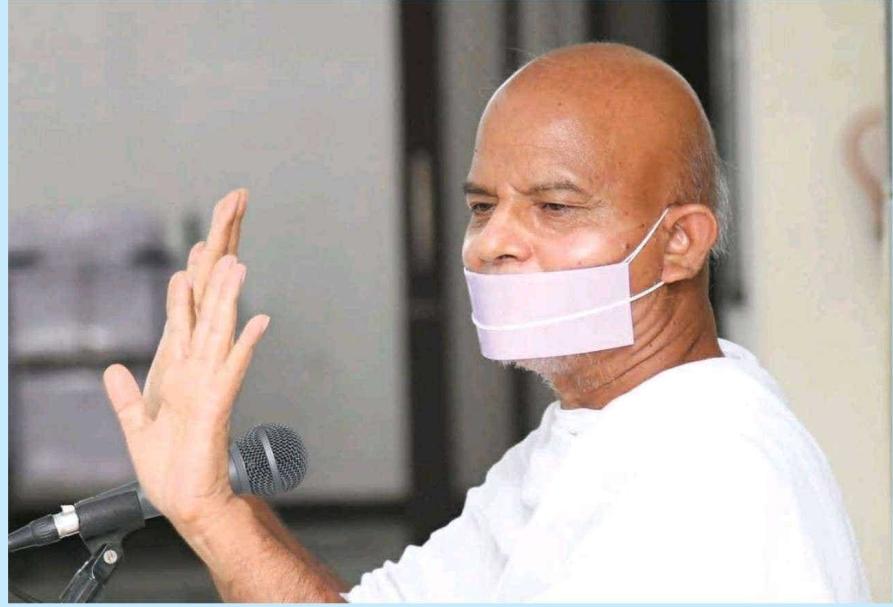
जैन धर्म के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देवना प्रदान करते हुए फरमाया कि अपने आपको विप्रसन्न करें, विशेषरूपेण प्रसन्न करें। सामान्य प्रसन्न होना भी एक उपलब्धि है। विशेष प्रसन्नता वह है, जो बाह्य निमित्तों से खंडित न हो। सामान्य प्रसन्नता परिस्थिति सापेक्ष होती है।

जो परिस्थिति से खंडित न हो वह विशेष प्रसन्नता है। जिस पर परिस्थिति का प्रहार काम कर सकता हो, वह प्रसन्नता सामान्य प्रसन्नता हो जाती है। विशेष प्रसन्नता का उपाय है, समता की निकटता से प्रेक्षा करो, आत्मसत करो।

एक चिंतन का आलम दिया गया कि साधु कैसे मन को समझाकर रखे। जो मिला वो ठीक है, न मिला तो भी ठीक है। नहीं मिला तो तपस्या ही जाएगी। जैसे भगवान ऋषभ के आहार न मिलने से वर्षातप हो गया था। तपस्या की वृद्धि आत्मा के लिए लाभदायी है। मिल गया तो शरीर को पोषण।

आदपी के हाथ में पुरुषार्थ तो किर भी हो सकता है। पर फल की प्राप्ति जसुरी नहीं। नहीं मिलने पर दुखी न बने। विसमता में न जाँ। परिस्थिति व निमित्त जैसे भी हो, उपाय करने का प्रयास कर लो, मन पर असर न दो। शांति में रहो। उद्धिन न बनो। तो विशेष प्रसन्नता की स्थिति बन सकती है।

सुख-दुःख है, शरीर में असाता है, तो इलाज करा लो मन से उद्धिन न बनो। प्राकृतिक उपाय जितना हो बढ़िया है। सुख-दुःख में समता। जीवन-मरण में भी समता। साधना अच्छी रखो। निंदा-प्रशंसा में भी समता। गुरुदेव तुलसी के कितनी



प्रतिकूलता की स्थितियाँ आई होंगी। विरोधों में भी अवरोधों की स्थिति न बने। हम अपने ढंग से काम करें। अच्छे कार्य द्वारा निंदा का जवाब दो। सबका अपना-अपना चिंतन हो सकता है।

वाणी से जवाब नहीं, अच्छा कार्य करो, उनसे जवाब दो तो प्रतिकूल जो बन रहे थे, हमारे प्रशंसक भी बन सकते हैं। मान-अपमान हो जाए तो भी समता रखो। ऐसी समता है, तो विप्रसन्नता, विशेष प्रसन्नता की स्थिति रह सकती है। विरोध करने वालों का अपना सिद्धांत हो सकता है। हम अपने ढंग से चले। विरोध होने पर निराश न हो जाएं न उनके प्रति द्वेष रखें, शांति रखें।

काम की बात है, तो सम्मान ले लो।

हम अपना परिष्कार करें। बेकार की चीज छोड़ दो। समता की साधना रखो, कहना आसान है, पर यूँ मुश्किल है। मौका आने पर समता रह सके तो बड़ी बात है। मन को प्रशिक्षित कर दिया जाए, चिंतन को अच्छा रखा जाए तो अनेक स्थितियों में आदमी शांति में रह सकता है।

किसी ने कोई बातें कह दी, वो बातें सही हैं तो तुम अपना ध्यान दो, अपना परिष्कार करो। वापस गुस्सा मत करो। वो तो उपकारी है, तुम्हारा, मानो तुहें उसने एक राय दे दी है। कोई झूट बोलता है, तो भी उस पर दया करो, पर गुस्सा मत करो। यह समझाकर मन को रखें तो समता का भाव रख सकते हैं।

आचार्य भिक्षु के सामने तो कितनी

स्थितियाँ आई होंगी, यों निराश होते तो संघ कैसे आगे बढ़ता। उन्होंने तो कंटकाकीर्ण स्थिति में अपने पथ का निर्माण किया होगा। हम अपने पुरुषों से, उनके जीवन से शिक्षा-प्रेरणा लेने का प्रयास कर सकते हैं।

संघ वह होता है जो शांत होता है। कुछ भी कर दो, चेहरे पर प्रसन्नता है। नासमझ न रहो, बात को समझ लो पर, शांति रखो। जीवन में कुछ आगे बढ़ना है, तो सहन करने की शक्ति का विकास जरूरी है। प्रकृति अच्छी है, तो सुख मिल सकेगा। कोआ-कोयल के प्रसंग से समझाया।

सभों साधु-साधी आपस में सेवा करावें तो ज्ञान की बात करें। आगम की चर्चा करें। समता ऐसा साधन है, जो आत्मा को

अध्यात्म की पूंजी को पुष्ट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अगली बात है—गति की। चरोंगों नहीं तो मंजिल नहीं मिल सकती। गति कभी मंद भले हो जाए, पर बंद न हो। गतिमत्ता चाहिए, भले कभी विश्राम लेना पड़े।

मंजिल, मार्ग, मार्गदर्शक और गति इन चार चीजों का बहुत महत्व होता है कहीं पहुँचने के लिए। अध्यात्म के संदर्भ में हम देखें तो हम जिस साधना के जगत में हैं। जैन दर्शन, जैन आगम के आलोक में जो साधना का क्षेत्र है, हम उसमें आगे हुए हैं। उस संदर्भ में हमारी मंजिल होती है। बहुत ऊँचा लक्ष्य मानो हमने बनाया है।

मोक्ष में पहुँचने का मार्ग क्या है, मार्गदर्शक कौन है। मार्गदर्शक सबसे बड़े तो अरहंत भगवान तीर्थकर हैं। उनसे बड़ा मार्गदर्शक अध्यात्म के जगत में मिलना मुश्किल है। अरहंत नहीं है, तो फिर निर्ग्रन्थ साधु-साधियाँ और उनमें भी गुरु-आचार्य प्रमुखरूपेण मार्गदर्शक बन सकते हैं। आगम भी मार्गदर्शक बन जाते हैं।

जिनेश्वरों ने मार्ग बताया है वह है—ज्ञान, दर्शन,

चारित्र और तप। चारों का समुच्चय अपने आपमें एक मार्ग है। वह सत्य है, वह सत्य ही है, जो जिनों के द्वारा प्रविदित है। अब गति करो। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप आराधना करो तो गति हो जाएगी।

चातुर्मासिक चतुर्दशी एक विशिष्ट पहचान लिए हुए है। वही चतुर्दशी के रूप में इसे माना जा सकता है। इस बार चतुर्मास आज ही लग रहा है। चातुर्मासिक पक्षी है। प्रतिक्रियण करें। चतुर्मास शुरू होने वाला है। चतुर्मास चार मास का समय, एक ही क्षेत्र में रहने का समय है। इसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना योजनाबद्ध और सुगमता से की जा सकती है।

किसी माध्यम से ज्ञान की आराधना होनी चाहिए। गृहस्थों में ज्ञानाराधना हो। दर्शनाराधना-शब्दा हमारी निर्मल रहे। सम्यक्-दर्शन के लिए कथाय-मंदता, यथार्थ के प्रति श्रद्धा, तत्त्वबोध हो। इनसे सम्यक्त्व की निर्मलता की ओर आगे बढ़ाया जा सकता है।

चारित्र की निर्मलता रहे। महात्रों की साधना अच्छी चले। दोष की आलोचना होती रहे, वरना चारित्र

के लिए खतरा है। प्रायश्चित लेने में आलस न करें। प्रायश्चित भी पड़ा न रहे, उसे उत्तरते रहना चाहिए। इसमें प्रमाद न हो। समितियों-गुप्तियों में हमारी सजगता रहे।

चारित्र तो एक पूंजी है ही। संयम या अध्यात्म की पूंजी को और पुष्ट करने के लिए तपस्या करो। उपास, स्वाध्याय, विनय, सेवा ये सब तप हैं। चतुर्मास का समय सामने है। इसमें हम सभी को इस चृष्टियों की आराधना में अपना नियोजन करने का प्रयास करना चाहिए। श्रावक-श्राविकाओं को भी समझना है। उनकी भी विशेषतया तपस्या चले। प्रेरणा से काम आगे बढ़ सकता है।

चतुर्मास में भी श्रावण-भाद्रव धर्म की आराधना के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। बहिर्विहारी साधु-साधियाँ भी ध्यान दें। प्रवचन से भी एक खुराक मिल सकती है। समय पर काम होना चाहिए। आगम आधारित प्रवचन हो। ज्ञानशालाओं को भी खुराक मिलती रहे। ज्ञानशाला बच्चों के लिए बरदान है। इसमें अध्यात्म ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार मिलते हैं।

उपासक श्रेणी के सदस्य हैं, उनका भी ज्ञान बढ़े और वे अपने ज्ञान से दूसरों को उपकृत करने का प्रयास भी कर सकते हैं। देश-विदेश में चतुर्मास में जितनी ज्ञान की गंगा प्रवाहित हो सके, उसे प्रवाहित रहने का प्रयास रहना चाहिए। भीलवाड़ा में तो साधु-समागम सा हो गया है। कितने साधु-साधियाँ यहाँ रवाइजित हैं। हम समय का सदुपयोग करें। चिंत समाधि में रहें।

जप-स्वाध्याय अच्छा चलता रहे। हम तप और संयम से अपने आपको भावित करते रहें, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने वर्षावास स्थापना का उपक्रम आधारिक मंत्रों के उच्चारण से करवाया। हमारा प्रवास क्षेत्र संपूर्ण भीलवाड़ा क्षेत्र है। वस्त्र-दवा आदि की मर्यादा के बारे में समझाया। हाजरी का वाचन करवाया। साधु-साधियाँ एवं समणियों ने लेख पत्र का उच्चारण किया। पूज्यप्रवर ने मर्यादाओं का महत्व समझाया।

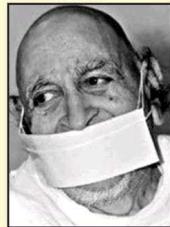
मुनि दिनेश कुमार जी ने मोक्ष के साधक और बाधक तत्वों के बारे में विस्तार से विवेचन किया।



आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा



ध्यान-परंपरा का विच्छेद क्यों?

उत्तर : (पिछला शेष) अवरोधों पर विचार करने के लिए हमें अतीत की यात्रा करनी होगी। क्योंकि अतीत के संदर्भ को समझे बिना किसी भी ऐतिहासिक परंपरा के विकास या व्यास का सही मूल्यांकन नहीं हो सकता।

जैन शासन की ध्यान-परंपरा का संबंध आगमकाल से है। आगमिक प्रणाली में धर्म-ध्यान और शुक्ल-ध्यान को आध्यात्मिक दृष्टि से उपादेय माना गया है। शताव्दियों तक इन्हीं आधारभूत तत्त्वों का महत्व आँका जाता था। सातवीं-आठवीं शताव्दी में विरचित 'ध्यान-शतक' इस प्राचीन परंपरा का प्रतीनिधि ग्रंथ है। इसके बाद पतंजलि ने अष्टांग योग की प्रूषपणा की। उसमें ध्यान के साथ प्राणायाम, आसन, धारणा, समाधि आदि तत्त्व भी जुड़ गए। इसी बीच मंत्र-तत्त्वों का व्यापक प्रसार शुरू हो गया। उस समय प्रचलित ध्यान की परंपरा पर भी इन सबका प्रभाव हुए बिना नहीं रह सका। इसके बाद आचार्य हरिहर, सोमदेव, शुभचंद्र, हेमचंद्र आदि आचार्यों के ग्रंथों और योग-दर्शन तथा हठयोग से प्रभावित ग्रंथों को देखने से ज्ञात होता है कि जैन आचार्यों ने हठयोग की बहुप्रचलित परंपरा को अपनाने का प्रयत्न किया है। उस प्रयत्न में ध्यान की प्राचीन परंपरा, जो धर्म-ध्यान और शुक्ल-ध्यान की परंपरा थी, गौण हो गई। इसी कारण लोगों की यह धारणा बन गई कि जैनों की अपनी कोई स्वतंत्र पद्धति है ही नहीं।

उस समय विशुद्ध ध्यान की परंपरा में अन्य तत्त्वों का समावेश तो हो गया था, पर वह विच्छिन्न नहीं हुई थी। उसके बाद कुछ सांप्रदायिक कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं, धर्मसंघ की सुरक्षा का प्रश्न ज्वलत हो उठा, लोकरंजन और लोक संग्रह का दृष्टिकोण निर्मित हो गया, मंत्रविद्या और तांत्रिक प्रयोगों से चमत्कार दिखाने का प्रलोभन जग गया। ये कुछ ऐसे कारण थे, जिन्होंने मध्यकाल में मान्त्रिक-तांत्रिक प्रयोगों तथा हठयोग पर अतिरिक्त बल दिया और जैन शासन की आचार संबंधी मौलिक परंपरा में श्लथता आ गई। इससे ध्यान-परंपरा में अवरोध की परिस्थिति पैदा हो गई।

प्रश्न : तो क्या हम यह मान लें कि उसके बाद ध्यान की परंपरा सर्वथा लुप्त हो गई? या उसके बाद भी कुछ आचार्य या मुनि ऐसे हुए हैं, जिन्होंने आचार के क्षेत्र में नई क्रिति कर ध्यान-साधना का पुनर्मूल्यांकन किया हो?

उत्तर : समय-समय पर जैन शासन में आचार-क्रतियाँ होती रही हैं। उनमें आचार पर पर्याप्त बल दिया गया, पर ध्यान की बात वहाँ भी गौण रही। उस समय जप की परंपरा प्रचलित हो गई थी, पर ध्यान की बात विरल व्यक्तियों तक सीमित रही। ध्यान-परंपरा को आगे बढ़ाने वालों में आचार्य आनंदधन, आचार्य चिदानंद, आचार्य मिश्रु और जयाचार्य आदि का नाम उल्लेखनीय है। यद्यपि इसके समय में भी व्यापक स्तर पर साधना का जो क्रम था, वह उस रूप में नहीं चल सका, किंतु भी बीच-बीच में उस क्रम को आगे बढ़ाते रहने से, किसी दृष्टि से ध्यान की परंपरा अविच्छिन्न चलती रही।

पिछली एक शताब्दी में ध्यान की बात काफी गौण हो गई थी, किंतु दो-तीन दशाव्दियों से वह सिलसिला फिर आगे बढ़ा। इस युग में ध्यान की नई-नई पद्धतियाँ आविष्कृत हुईं और भाँति-भाँति के प्रयोग होने लगे। जैन साधु-साधियों और श्रावकों को यह प्रतीति होने लगी कि हमारे यहाँ ध्यान की कोई पद्धति नहीं है, इसलिए उनका झुकाव उस समय प्रचलित प्रयोगों की तरफ होने लगा। इधर प्राचीन ग्रंथों के स्वाध्याय का नया क्रम बना। ग्रंथ पढ़ने से यह धारणा बनी कि उन ग्रंथों में बार-बार ध्यान साधना की चर्चा की गई है, पर वर्तमान में कोई प्रयोग नहीं हो रहा है। किंतु यह तो निश्चित लगता है कि जैनों की भी ध्यान की कोई निश्चित परंपरा अवश्य रही है।

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अनुकूलता हुई। स्थिति का परिपक्व हुआ, समय का योग मिला और ध्यान की विच्छिन्न परंपरा को फिर से जोड़ने की बात मन में आई। आगम-अनुरूपधन का काम यहाँ चल ही रहा था। उस संदर्भ में उत्तराध्ययन नामक आगम का संपादन हो रहा था। उस समय श्वेतांबर और दिगंबर-परंपरा के अनेक ग्रंथ हमारे सामने थे। उनके अवलोकन से पता चला कि जैन आगमों में ध्यान के बहुत तत्त्व विखरे पड़े हैं। तब से हमारा ध्यान इस ओर केंद्रित हो गया। इसके लिए हमने मुनि नमथलाजी (युवाचार्य महाप्रज्ञ) को निर्देश दिया कि जैन धर्म में ध्यान की जो प्राचीन परंपरा रही है, उसकी खोज करनी है और विच्छिन्न परंपरा को शृंखलाबद्ध कर उसे वर्तमान पीढ़ी के सामने प्रस्तुत करना है।

विंसं० २०१६ उदयपुर चतुर्मास से इस दिशा में काम शुरू हो गया। सबसे पहले आगमों में ध्यान के आधारभूत तत्त्वों की खोज की गई। उसके बाद अस्यास और प्रयोग का क्रम चला। प्रयोग काल में नई-नई जिज्ञासाएँ उभरी, उनका समाधान मिला और अस्यास करते-करते संकल्प फलवान हो गया। पंद्रह वर्ष तक अनवरत परिश्रम के बाद एक विस्मृत पद्धति हमारे ध्यान में आ गई, जिसने प्राचीन परंपरा को पुनः सजीव कर दिया। इसके लिए हमें नए सिरे से कुछ भी करने की जरूरत नहीं पड़ी। हमारा काम था मूल्यांकन का। मूल्यांकन के अभाव में उपयोगी-से-उपयोगी तत्त्व भी काल की परतों के नीचे दब जाता है और साधारण तत्त्व मूल्यांकन के बाद लोगों की नजर पर चढ़ जाता है। मूल्यांकन की दृष्टि उपलब्ध हुई, तब सही स्थिति का बोध हुआ। उसके बाद जैन-परंपरा में प्रचलित ध्यान-पद्धति पर आए हुए आवरण को तोड़कर उसे प्रकाश में लाने का हमारा संकल्प और दृढ़ हो गया और आखिर हमें अपने काम में सफलता मिल गई।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(४)

मानवता के उदय! अभ्युदय! जीवन का हर पल उत्सवमय रहो निरामय ज्योतिवलय तुम नूतन संस्कृति के सूर्योदय!

चमक रहे हैं सौ-सौ सूरज उगे हजारों आज सुधाकर मधु क्रतु देह धारक उत्तरी मुदित दिशाएँ गीत सुनाकर बिछी रश्मियाँ अगवानी में उजल रहीं जोते श्रद्धामय।।

जन-जीवन को जागृत करने कदम बढ़ाए तुमने जब से युगधारा को गति देने की सघन तमना मन में तब से नयन खोल प्रज्ञा के तुमने दूर कर दिए सारे संशय।।

अक्षय सुधा-कलश हाथों में बूँद-बूँद क्या वितरण करते भर-भर चपक पिलाओ सबको जनम-जनम की पीड़ा हरते मत्त्वों को अमरत्व बाँटकर पग-पग विजय वरो मूल्यजय!।।

अर्धवान हर भोर मुवारक नई कीर्ति के हस्ताक्षर को चंदन-चर्चित नए स्वन सब अर्पित हैं इस ज्योतिर्धर को मन के नभ पर आज उकेरें आस्था के स्वरितक मंगलमय।।

(५)

तुम्हारा रूप हो जिसमें मुझे दे दो वही दरपन। तुम्हारे स्वर जहाँ गूंजे मुझे दे दो वही मधुवन।।

तुम्हें नभ की विजलियों ने उजालों से सजाया है नदी की कलकलाहट ने तुम्हारा गीत गाया है समंदर दे गया तुमको स्वर्य ही अतल गहराई हिमालय के शिखर ने भी सौंप दी अमित ऊँचाई बाँटते ज्ञोलियाँ भर-भर महक तुमको सुमन सारे निशावर कर रही मैं भी अबोला हृदय का स्पंदन।।

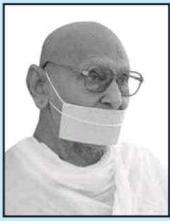
पहाड़ों ने दिया तुमको हृदय चट्टान-सा दुःखतर बहारे धन्य अपने में खुशी मस्ती तुम्हें देकर सितारों ने चमक भर दी तुम्हारे नयन-तारों में पवन-सा वेग चरणों में जगत चलता इशारों में गले की मधुरिमा तुमको समर्पित कर गई कोयल मिली है जो सुधाकर से सुधा बरसा रही चितवन।।

प्रमादी है मनुज इतना कि जीना हो गया भारी बिना मरधट जला डाली निजी हर कामना कांरी लिए टूटन विश्वास से घुटन में ले रहा साँसें कफन भी है नहीं इतना ढकी जो जा सकें लाशें सिखाओ गणित जीवन का दिखाओ राह मंजिल की स्वर्य की समझ ले मानव सहज ही दूर हो बचपन।।

जगा आक्रोश जन-जन में हवा विद्रोह की फैली तमना शांति की फिर भी नए सुग की नई शैती विषमता के झरोखों में विषेता धूम आता है मुंरी पलकें मनुजता की नहीं कुछ भी सुहाता है अधूरे रह गए सारे पले जो स्वन नयनों में तिमिर आलोक बन जाए मिले यदि तेज का दर्शन।।

अधर के बोल सब जूटे तुम्हें कैसे मनाऊँगी नहीं हैं शब्द भी कैसे तुम्हारे गीत गाऊँगी विचारों की चपल लहरें नहीं खामोश होती हैं झाँकलो देवते! दिल में सृजन की रात सोती है करों में थाम बैसाखी सबल विश्वास की चलती तुम्हारे हर इशारे पर सदा रहता समर्पित मन।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

क्रिया-अक्रियावाट

(८) क्रियावादिषु चामीध्य-स्तर्कणीयो विषयः।
अप्येके गृहवासा: स्युः, केचित् सुलभबोधिकाः॥

आत्मवादियों की स्थिति उनसे नितांत विपरीत होती है। कुछ लोग गृहवासी होते हुए भी सुलभबोधि-धर्मोन्मुख होते हैं।

(९) दर्शनशावकाः केचिद्, व्रतिनो नाम केचन।
अगारमावसन्तोऽपि, धर्माराधनतपराः॥

कुछ दर्शन-शावक-सम्यकदृष्टि होते हैं, कुछ ब्रती होते हैं। वे घर में रहते हुए भी धर्म की आराधना करने में तत्पर रहते हैं।

इस प्रकार उपासक की चार कक्षाएँ होती हैं-

(१) सुलभबोधि : धर्मप्रिय व्यक्ति। इनमें धर्म-कर्म संबंधी मान्यताओं का ज्ञान नहीं होता किंतु धर्म के प्रति आकर्षण होता है। वे धर्म का आचरण नहीं भी करते फिर भी उन्हें धर्म प्रिय लगता है।

(२) सम्यग्दृष्टिः : जिनका दृष्टिकोण सम्यग् होता है और जो सत्यान्वेषण के लिए चल पड़े हैं उनको सम्यग्दृष्टि कहा जाता है। इसकी व्यावहारिक परिभाषा यह है कि जो जीव, अजीव आदि नौ तत्त्वों को जानते हैं वे सम्यग्दृष्टि होते हैं।

(३) ब्रती : जो उपासक के बारह ब्रतों का यथाशक्ति पालन करते हैं वैसे व्यक्ति।

(४) प्रतिमाधारी : प्रतिमा का अर्थ है विशेष अभिग्रह-प्रतिज्ञा। जो व्यक्ति उपासक की ग्यारह प्रतिमाओं का पालन करते हैं, वे प्रतिमाधारी कहलाते हैं।

गृहस्थ की ये चार कक्षाएँ हैं। ये उत्तरोत्तर विकसित अवस्थाएँ हैं। उपासक पहले सुलभबोधि होता है। वह धर्म के संपर्क में आता है। कुछ जानता है और जब उसे दृढ़ निश्चय हो जाता है कि धर्म-कर्म, पुण्य-पाप, आत्मा आदि हैं, कर्म है, उनका फल है, तब वह सम्यग्दृष्टि की कक्षा में आता है। अब उपासक मिथ्यात्व छूट जाता है और उसमें सत्य की जानेकी उत्कट इच्छा उत्पन्न होती है। सत्यान्वेषण के लिए वह चल पड़ता है। उसके मन में संयमित जीवन जीने की लालसा उत्पन्न होती है। गृह-त्यागने में वह अपने आपको असमर्थ पाता है, तब वह अपनी शक्ति के अनुसार कुछेक ब्रतों को स्वीकार करता है। धीरे-धीरे व्रत ग्रहण कर विकास कर वह बारहवारी शावक बन जाता है। वह तीसरी कक्षा में आ जाता है। अब उपासका व्यवहार, वर्तन और आचरण बहुत संयमित और सीमित हो जाता है। उपासका गमनागमन, उपभोग-परिभोग आदि सीमाबद्ध हो जाते हैं। उसकी आकांक्षाएँ अल्प हो जाती हैं और वह सांसारिक प्रवृत्तियों से अपने आपको बहुत विलग किए चलता है। जब उपासक आसक्ति की मात्रा अत्यंत क्षीण हो जाती है तब वह चौथी कक्षा में प्रवेश करता है। वह ग्यारह प्रतिमाओं का वहन कर अपनी आत्मशक्ति को तोलता है। इन प्रतिमाओं के वहन-काल में श्रमणभूत की-सी चर्चा का पालन करता है, किन्तु अपने परिवार से उपासक प्रेम विछिन्न नहीं होता, अतः वह श्रमण नहीं कहलाता।

उपासक की ये चार कक्षाएँ हैं। इनमें धर्म का पूर्ण विकास होता है। जब वह उपासक गृहत्याग कर मुनि बनना चाहता है तब उसे पाँचवीं कक्षा-मुनि की कक्षा में प्रवेश करना होता है।

(क्रमशः)

अवबोधि

□ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडन्हू' □

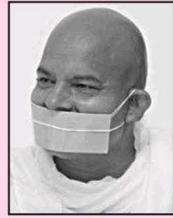
(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-६ : इन पाँचों का स्वरूप क्या है?

उत्तर : उपरोक्त मोहनीय कर्म की सात प्रकृतियों के उपशमन से औपशमिक, सर्वथा क्षय से क्षायिक एवं क्षयोपशम से प्राप्त सम्यक्त्व क्षायोपशमिक कहलाती है। औपशमिक सम्यक्त्व से गिरने वाला जीव मिथ्यात्व की ओर अग्रसर हो रहा है, उस समय की सम्यक्त्व को सास्वादन सम्यक्त्व कहते हैं।

क्षयक सम्यक्त्व की प्राप्ति जब क्षायोपशमिक सम्यक्त्व से होती है, उसके अंतिम समय में सातों प्रकृतियाँ प्रदेशोदय के रूप में अनुभूत होती हैं, उसे वेदक सम्यक्त्व कहते हैं वैसे यह क्षायोपशमिक सम्यक्त्व का अंतिम समय है।

(क्रमशः)



उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य शश्यंभव

आचार्य शश्यंभव हस्तरेखा के जानकार थे। मनक का हाथ देखने से उन्हें लगा, बालक का आयुष्म बहुत कम रह गया है। ऐसी स्थिति में समग्र शास्त्रों का अध्ययन करना इसके लिए संभव नहीं है।

आचार्य शश्यंभव चतुर्दश पूर्वधर्म थे। उन्होंने अल्पायुष्म मुनि मनक के लिए पूर्वों से दशवैकालिक सूत्र का निर्योहण किया। इस सूत्र के दस अध्ययन हैं। इसमें मुनि-जीवन की आचार-संहिता का निरूपण है। यह सूत्र उत्तरवर्ती नवीन साधकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

मुनि मनक को आचार्य शश्यंभव के सन्निध्य का लाभ दीर्घ समय तक प्राप्त न हो सका। संयम-पर्याय के छह महीने ही बीते थे, मुनि मनक का सर्वगावास हो गया।

शश्यंभव श्रुतधर आचार्य थे, पर वीतराग नहीं बने थे। पुत्र-स्नेह उभर आया। उनकी आँखें मनक के मोह से गीली हो गईं।

यशोभद्र आदि मुनियों ने उनसे खिन्नता का कारण पूछा। आचार्य शश्यंभव ने बताया—‘यह मेरा संसारपर्याय पुत्र था। पुत्र-मोह ने मुझे विद्वल कर दिया है। यह बात पहले श्रमणों के द्वारा जान लिए जाने पर आचार्य-पुत्र समझकर कोई इससे परिचर्या नहीं करवाता और यह सेवा धर्म के लाभ से विचरित रह जाता। अतः इस भैद्र को आज तक मैंने श्रमणों के सामने उद्दासित नहीं किया था।’ श्रुतधर शश्यंभव की गौपनीयता पर श्रमण आश्वर्यचकित रह गए।

आचार्य प्रभव के सर्वगावास के बाद श्रुतधर शश्यंभव ने धर्मसंघ का दायित्व संभाला। वीतराग शासन की उन्होंने व्यापक प्रभावना की। स्वयं से अधिक परिचित और अतिनिकट यज्ञनिष्ठ ब्राह्मण समाज को यज्ञ का अध्यात्म रूप समझाकर उनको जैन धर्म के अनुकूल बनाया तथा नाना रूपों में जैन शासन की श्रीवृद्धि उन्होंने की।

आचार्य शश्यंभव अद्वैत वर्ष की अवस्था में श्रमण दीक्षा ग्रहण कर उनतालीस वर्ष की अवस्था में आचार्य पद पर आस्तू हुए थे। संयमी जीवन के कुल चौंतीस वर्षों में तेईस वर्ष तक युगप्रधान पद के दायित्व का निपुणता से निर्वहन किया। वे बासठ वर्ष की अवस्था में वीर्वनिं ६८ (विंपू० ३७२) में सर्वगावासी बने।

आचार्य यशोभद्र

यशोभद्र स्वामी भगवान् महावीर के पाँचवें पट्ठधर थे। वे आर्य शश्यंभव के उत्तराधिकारी थे। श्री शश्यंभव के पास बाईंस वर्ष की युवावस्था में संयमी बने। चौदह वर्ष तक उनके पास रहकर चौदह पूर्वों का ज्ञान अर्जित किया। छत्तीस वर्ष की आयु में आर्य शश्यंभव के सुयोग्य पट्ठधर बने। आचार्य सम्भूतविजय और आचार्य भद्रबहु—ये दोनों ही उनके शिष्य थे। आर्य यशोभद्र तक एक आचार्य की परंपरा रही। उन्होंने उन दोनों को आचार्य बनाकर जैन शासन में एक नई परंपरा को जन्म दिया। आर्य यशोभद्र अपने संयम पर्याय के चौंसठ वर्ष के समय में पचास वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। उनके सबल और सक्षम व्यक्तित्व और कर्तृत्व के बल पर प्रलंब शासनकाल भी बहुत सुखमय, प्रशांत व प्रभावक रहा। वे छियासी वर्ष की आयु में वीर निर्वाण १४८ (विंपू० ३२२) में दिवंगत हुए।

(क्रमशः)



नौ आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्रों का लोकार्पण



विजयनगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, विजयनगर द्वारा नौ आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्रों का जैन संस्कार विधि से लोकार्पण किया गया। प्रथम चरण में राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी की अध्यक्षता में एवं कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना, निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया की गरिमामय उपस्थिति में कोरा, ऊरुकेरे एवं डावसपेट के सरकारी विद्यालयों में तीन प्रज्ञा केंद्रों का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन से पूर्व स्थानकवासी संप्रदाय की साधी रिदिमाश्री जी का प्रज्ञा केंद्र में पदार्पण हुआ एवं उन्होंने मंगल पाठ प्रदान किया।

कार्यक्रम में कर्तारक के पूर्व मुख्यमंत्री जी० परमेश्वर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। परिषद अध्यक्ष पवन मांडोत ने राष्ट्रीय नेतृत्व, उद्घाटनकर्ता

परिवार, मुख्य प्रायोजक एवं सभी प्रायाजकों का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने प्रज्ञा केंद्रों के उद्घाटन अवसर पर कहा कि एक परिषद द्वारा १३ प्रज्ञा केंद्र खोलना सचमुच में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। संपूर्ण परिषद ने इस कार्य को सहज रूप में संपन्न कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। कार्यक्रम में उद्घाटनकर्ता के रूप में उपस्थित निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने कहा कि प्रज्ञा केंद्र के उद्घाटनकर्ता के रूप में अवसर मिलना सीधाराय की बात है। उन्होंने स्कूल प्रबंधकों से प्रज्ञा केंद्र की व्यवस्थित देखभाल करने के लिए निवेदन किया।

मुख्य प्रायोजक राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना ने कहा कि प्रज्ञा केंद्र के रूप में विद्यार्थियों को अपनी प्रज्ञा को नियंत्रित करने के लिए व्यवस्थित अवसर उपलब्ध होंगे। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री

परमेश्वर ने कहा कि जैन समाज और तेरापंथ समाज मनव सेवा के लिए सदैव समर्पित रहा है और यह निश्चार्थ भाव से सेवा करने वाले हैं। आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र के उद्घाटन के द्वितीय चरण में द्वितीय दिवस पर राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोकरणा की अध्यक्षता में ६ प्रज्ञा केंद्रों का शुभारंभ किया गया। ये प्रज्ञा केंद्र येलियुर, लिंगनहल्ली, ब्रह्मसन्देशगेट, जग्नोडनहल्ली, कल्लवेल्ला, पंजीयनहल्ली के सरकारी विद्यालयों में लोकार्पण किए गए। प्रज्ञा केंद्र के उद्घाटन में कर्तारक सरकार के पूर्व मंत्री टी०बी० जयवंद्रा ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर परिषद द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। प्रज्ञा केंद्र का उद्घाटन समारोह जैन संस्कार विधि से संस्कारक के रूप में राकेश दुधोड़िया, दिनेश मरोटी, लाभेश कांसवा, विकास बांठिया, उज्ज्वल सिंधी ने अपनी सेवाएँ दी।

कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से प्रज्ञा केंद्र के दक्षिण प्रभारी तेजराज चौपडा, अनिल नाहर, सीपीएस के मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, विशाल पितलिया, दिनेश मरोटी, सतीश पोरवाड, गौतम खाड्या, परिषद से उपाध्यक्ष मनोज बराड़िया, अमित दक, महावीर टेबा, तेजमल मांडोत, हितेश भटेवरा, कैलाश बोहरा आदि की विशेष उपस्थिति रही। सभी स्कूलों में स्कूल प्रबंधकों ने परिषद परिवार का सम्मान किया एवं प्रज्ञा केंद्र के लोकार्पण के लिए परिषद परिवार को धन्यवाद ज्ञापित किया। आभार ज्ञापन मंत्री देवांग वैद ने किया।

आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर, दंत चिकित्सालय, पुस्तकालय एवं ध्यान केंद्र का उद्घाटन समारोह



अहमदाबाद।

तेयुप एवं तेरापंथ सेवा समाज के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर, दंत चिकित्सालय, पुस्तकालय एवं ध्यान केंद्र का बृहद उद्घाटन समारोह शासनशी साधी रामकुमारी जी, साधी रतनशी जी एवं साधी सरवती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग में आयोजित किया गया।

शासनशी साधी सरवती जी ने नेमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ करवाया। युवक परिषद के साथी सदस्यों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने शावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेरापंथ सेवा समाज के अध्यक्ष नानालाल कोठारी के साथ तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी ने सभी अतिथियों का अभिवादन करते हुए स्वागत वक्तव्य दिया। तेरापंथी सभा, अहमदाबाद के अध्यक्ष अशोक सेठिया ने तेयुप, अहमदाबाद टीम को प्रोत्साहित करते हुए सेवार्थ स्थायी प्रकल्प की प्रशंसा करते हुए शुभकामनाएँ दी। तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान द्रस्टी सज्जनलाल सिंधी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

अतिथि विशेष कुमारपाल देसाई ने गणाधिपति गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के संसर्वणों को सज्जा करते हुए वर्तमान समय में पुस्तकालय को मन की हाँस्पिटल बताया। अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुलालिया ने अपने वक्तव्य में तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी एवं सेवा, संस्कार, संगठन के कार्यों में अग्रसर रहने वाली अहमदाबाद परिषद से जुड़े सभी युवा साथियों और आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर के प्रभारियों के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी और उनकी टीम के कार्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए पंकज डांगी को अभातेयुप की कार्यकारिणी में विधिवत सम्मिलित किया। अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री मनीष दत्तरी ने पंकज डांगी का राष्ट्रीय टीम में स्वागत करते हुए अहमदाबाद परिषद द्वारा सेवा, संस्कार, और संगठन के कार्यों की सराहना की। अभातेयुप उपाध्यक्ष अमित नाहटा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयेश मेहता ने अहमदाबाद परिषद की संगठन शक्ति को अन्य शाखा परिषदों के लिए अनुकरणीय बताया। शाखा प्रभारी सुभाष चपलोत ने पंकज को उनके सफलतम कार्यकाल के लिए बधाई प्रेषित की।

शासनशी साधी सरवती जी ने मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए पुस्तकालय को जीवन विकास की संजीवनी बताया। शासनशी साधी रमावती जी ने आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर एवं दंत चिकित्सालय समाज के सभी समुदायों के लिए लाभप्रद होगा। कार्यक्रम के मध्य सभी अर्थ सहयोगी और मुख्य अतिथियों को परिषद के द्वारा मोमेटो से सम्मानित किया गया।

जैन विद्या कार्यशाला-२०२१ का बैनर अनावरण

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद एवं समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्य महाश्रमण जी के बृष्टिपूर्ति वर्ष पर जैन विद्या कार्यशाला-२०२१ (आचार्यश्री महाश्रमण जी का अनुपम कृति तीन बारे ज्ञान की पर आधारित) का बैनर अनावरण साधीवृदं के सान्निध्य में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी, अभातेयुप टीम, समण संस्कृति संकाय के उत्तर जौन के प्रभारी अदिति सेखांगी, जैन विद्या कार्यशाला के स्थानीय संयोजकों की उपस्थिति में जैन विद्या कार्यशाला-२०२१ के बैनर का अनावरण किया गया।

तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी ने अहमदाबाद में विराजित चारित्रात्माओं की प्रेरणा से जैन विद्या कार्यशाला में संभागी बने ७०० से अधिक सदस्यों की राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी को आध्यात्मिक भेंट दी।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा समाज के मंत्री अरुण वैद एवं तेयुप मंत्री संदीप मांडोत ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम के अंत में तेयुप सहमंत्री सागर सालेचा ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।





आचार्य भिक्षु जन्म दिवस व बोधि दिवस

भगवान् महावीर और आचार्य भिक्षु के जीवन में अनेक साम्यताएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, 22 जुलाई, 2021

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक

आचार्य भिक्षु के परंपर पट्ठधर एकादशम अधिशास्त्र परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु का २६६वाँ जन्मोत्सव एवं बोधि दिवस मनाया गया। आज के दिन कंठालिया में माता दीपांजी की कुक्षी से भीखण का जन्म हुआ था। आज ही के दिन राजनगर में मुनि भीखण को श्रावकों की शंकाओं ने उन्हें आत्म-निरीक्षण के लिए वाध्य कर दिया। उससे जो फलित हुआ वह सारे संसार के लिए बहुत गुणकारक हुआ।

आचार्य भिक्षु के एकादशम पट्ठधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि वीर पुरुष महान पथ के लिए समर्पित होते हैं।

प्रश्न है कि वीर पुरुष ही क्यों समर्पित हो सकते हैं, महान पथ के लिए?

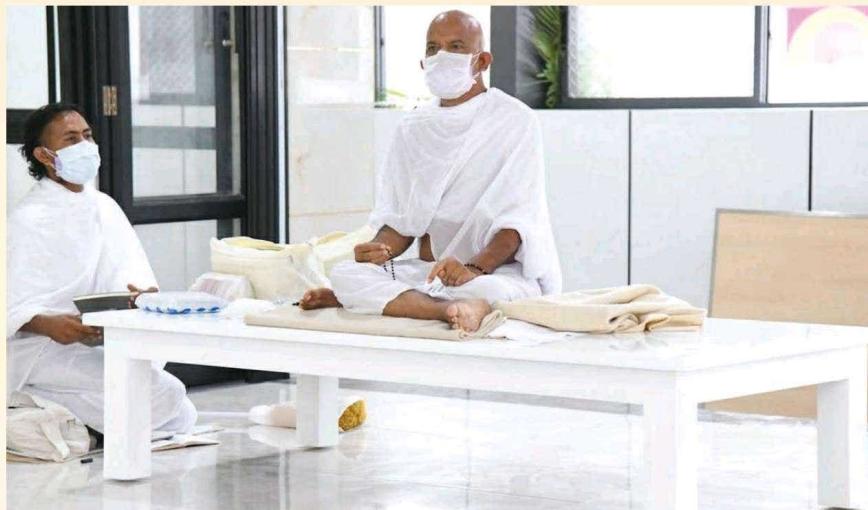
मैं व्यावहारिक रूप में बताना चाहूँगा कि महान पथ के लिए वीर होना जरूरी है। पहाड़ी मार्ग है, ऊँचाई का पथ है, उस पर चलना है। बिना वीरता के चलना कठिन है, वरना आदमी थक सकता है। वैसे ही महान पथ पर चलने के लिए पैरों में वीरता चाहिए। तभी वह आरोहण कर सकता है। स्वावलंबन से वही चढ़ता है, जो वीर होता है। यह वीरता बाह्य हो गई। भौतिक पथ है, भौतिक बल की बात हो गई।

जहाँ अभौतिक पथ होता है, वह भी ऊँच-महानता का है, क्रांति का पथ है, आचरणगत उच्चता का पथ है, वहाँ भी भावात्मक वीरता चाहिए। निष्ठा और संकल्प के रूप में वीरता होती है, तो आदमी उस पर चल सकता है, वरना चल पाना मुश्किल होता है।

आचार्य भिक्षु का आज जन्म दिवस है। जन्म दिवस अपना-अपना होता है। जन्म में प्रकृत रूप में और तात्कालिक रूप में जन्म लेने वाले का कोई कृतत्व नहीं होता। जन्म के बाद में जीवन काल में कृतिव बोलता है, आचार्य भिक्षु के जन्म और जीवन के प्रसंगों को मैं देखूँ तो मुझे भगवान महावीर की भी सृष्टि हुई।

मैं कुछ अंशों में भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु में समानता देखता हूँ। भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु का जन्म शुक्ल त्रयोदशी को हुआ। भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु ने सांसारिक जीवन में प्रवेश किया था, विवाह हुआ था। दोनों ही पुत्री के पिता बने। पुत्र नहीं हुआ। भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु ने युवावस्था में अभिनिष्क्रमण किया, दीक्षा स्वीकार की।

भगवान महावीर को नमोत्थुं में आइगराणं कहते हैं, एक अपेक्षा से भूल न हो जाए तो आचार्य भिक्षु भी आदिगर थे। भगवान महावीर तीर्थ के आदिगर थे। आचार्य भिक्षु ने एक पंथ की स्थापना की एवं पंथ के आदिगर



हो गए। भगवान महावीर ने स्वयं दीक्षा ली थी तो आचार्य भिक्षु ने भी केलवा में स्वयं ने ही दीक्षा का पाठ स्वीकार किया।

भगवान महावीर के साधना काल में उपर्मा-विरोध, कठिनाइयाँ आई थीं। देवता मनुष्य-तिर्यंच संबंधी भी भगवान महावीर के सामने कठिनाइयाँ आई तो आचार्य भिक्षु के जीवन को देखें तो केलवा में देवकृत स्थिति भी आ गई। मनुष्यों ने तो विरोध किया ही था। यक्षराज ने नाग का रूप बनाया था तो नाग के रूप में कठिनाइ थोड़ी आ गई थी।

भगवान महावीर ने तीर्थ की स्थापना की तो आचार्य भिक्षु ने भी नए रूप में एक तीर्थ की स्थापना कर दी। चतुर्विधि तीर्थ की स्थापना की थी। इस तरह हम अनेक रूप में भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु के जीवन में सायं का दर्शन कर सकते हैं।

भगवान महावीर ने साम्य-समता की साधना की तो आचार्य भिक्षु के जीवन में कितनी स्थितियाँ आई उनमें साम्य रहा होगा, समता रही होगी। आचार्य भिक्षु के जन्म के बाद की बात हम देखें। उनमें ज्ञानवारणीय कर्म का श्योपशम अच्छा दिखाई दे रहा है। उनमें जो बौद्धिक बल, ज्ञान का बल था वह सामान्य आदमी में मिलना मुश्किल है। भले उसे औत्यक्तिक बुद्धि कहा जाए।

आचार्य भिक्षु ने किस प्रकार शास्त्रों का अवगाहन किया होगा। संस्कृत और प्राकृत भाषा के कम जानकार होते हुए भी उन्होंने आगमों का अर्थ किस प्रकार ग्रहण किया है, वह एक विशेष बात है। उनके पास विशेष प्रतिभा बल था। केवल जानना ही नहीं, प्रतिपादन करने की क्षमता थी। उनमें मति बल के साथ प्रतिपादन करने का बल भी था।

उनमें आस्था का बल भी दिखाई दे रहा है। भगवान महावीर या जिन वाणी के प्रति उनमें निष्ठा-समर्पण था उनमें आचार्य की निर्मलता भी थी। उन्होंने जो बोधि प्राप्त की इसके पीछे एक सैद्धांतिक और आचारात्मक

बोध और निष्ठाएँ उसकी पृष्ठभूमि में लग रही हैं। ये मैं उनकी काव्यात्मक भाषा या शैली की बात बता रहा हूँ।

बोधि की जो बात है, वे एक संप्रदाय में दीक्षित भी हो गए थे। प्रतिभा थी तो शास्त्रों का अध्ययन भी करते। मन में प्रश्न उठते। विद्यार्थी की इस बात को सफलता मानता हूँ, जिसके दिमाग में ठीक प्रश्न पैदा होते हैं। ताकिक बुद्धि चाहिए। ताकिकता है, तो विद्यार्थी का ज्ञानात्मक विकास हो सकता है। वे अपने गुरुजी के कृपापत्र-प्रिय शिष्य थे।

आचार्यप्रवर ने राजनगर की घटना को बताते हुए फरमाया कि उन्होंने सत्य का अन्वेषण कर अपनी ताकिक बुद्धि से ऐसे पंथ का निर्माण किया जिसकी मजबूत और गहरी नींव से तेरापंथ धर्मसंघ चहूँदिशा में आतोकित है।

ज्योति का अवतार बाबा, ज्योति ले आया। गीत के एक पद का सुमधुर संगान किया। ऐसे हमारे आचार्य भिक्षु जिनका आज जन्म दिवस और बोधि दिवस जो आज मेवाड़ में हमारे सान्निध्य में आया है। जिस मेवाड़ की धरती पर वास्तव में बोधि की बात हुई थी।

परम पूज्य आचार्य भिक्षु का जो जीवन दर्शन है, कांत दर्शन है, शांत दर्शन है, उस दर्शन से हमें प्रेरणा मिलती रहे। यह काम्य है। तेसे या उपरास करने वालों से प्रत्यार्थियां करवाया।

मुनि मोहनीजी कुमार जी ने आचार्य भिक्षु के विषय में बताया कि जन्म तो हर किसी का होता है, पर उस किसी के साथ कुछ विरले पुरुष कुछ ऐसे कृतित्व, जिनकी कहानी कितने ही शब्दों में कह दें, कम है। इतिहास बनता नहीं बनाया जाता है।

मुनि उदित कुमार जी ने बताया कि जन्म लेना एक नियति है। पर हमारे आराध्य के साथ जुड़ने से वह तिथि विशेष हो जाती है। आचार्य भिक्षु कांतिकारी थे, कुशल संगठक थे। उन्होंने संगठन को मजबूत बनाया। तेरापंथ हमारे लिए आदर्श है।

साध्वी मननयशा जी, मुनि संबोध कुमार जी, पूज्यप्रवर द्वारा घोषित नव समणी नियोजिका, समणी अमलप्रज्ञा जी ने अपनी भावना परम पावन पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

परम पावन ने फरमाया कि हमने आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस और बोधि दिवस मनाया है। हमें भिक्षु स्वामी से प्रेरणा अध्यात्म की, ज्ञानार्जन की, आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहे। समणी अमलप्रज्ञा खूब अच्छा विकास करे, अच्छी सेवा करे।

साध्वी जयंतमाला जी व साध्वी संकल्पप्रभा जी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने सम्प्रकृत्व के बारे में बताया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - संदीप कोठारी द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : दिनेश मरोठी